राजनीति सिद्धान्त :-

राजनीति विज्ञान का संबंध मनुष्यों के सार्वजनिक जीवन से है जिसमें सबके ऊपर सत्ता का प्रयोग होता है। सबके लिए नियम और निर्णय लिए जाते हैं। समाज के मूल्यवान संसाधनों का वितरण किया जाता है। यह सारी प्रक्रिया किस तरह काम करती है इसकी चिन्ता रा. सिद्धान्त के अन्तर्गत होती है चूंकि मनुष्य विवेकशील प्राणी है अतः वह किसी समाज व्यवस्था का निर्माण करता है लेकिन कोई भी समाज व्यवस्था पूर्ण नही होती अतः कोई सिद्धान्तकार उसकी आलोचना प्रारम्भ करता है और विकल्प के तौर पर नयी व्यवस्था का निर्माण करता है यह सारी प्रक्रिया राजनीति सिद्धान्त में शामिल है।

इस तरह राजनीति सिद्धान्त में तीन प्रमुख कार्य रहते हैं।
(i) वर्णन (ii) समालोचना (iii) पुन निर्माण
इनमे से वर्णन कार्य राजनीति विज्ञान से संबंधित है जबकि समालोचना और पुनर्निर्माण के कार्य राजनीति दर्शन में शामिल है।
अतः राजनीति सिद्धान्त के दो मुख्य अंग हैं रा. विज्ञान व रा. दर्शन।
— समालोचना व पुनर्निर्माण पर राज. दर्शन बल देता है व मूल्यों को महत्व देता जबकि रा. विज्ञान व्याख्या पर बल देकर तथ्यों को स्वीकार करता है

राजनीति सिद्धान्त की उपयोगिता :-

1. ऐतिहासिक क्रांतियों का प्रेरणा स्रोत।
2. पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ निर्धारण और अवधारणाओं का स्पष्टीकरण
3. इतिहास की व्याख्या और सामाजिक पुनर्निर्माण।
4. राजनीति तर्क का निर्माण और उसका परीक्षण।

राजनीति सिद्धान्त में तथ्य-मूल्य विवाद :-

राजनीति सिद्धान्त में मुख्य रूप से दो तरह के कथन होते हैं।
1. अनुभवमूलक (तथ्य) 2. मूल्यपरक (मूल्य)

★ वैज्ञानिक पद्धति जिस पर प्रत्यक्षवाद ने विशेष जोर दिया केवल अनुभवमूलक कथनों को ही मान्यता देता है जिन्हे सत्य या असत्य सिद्ध किया जा सकता है।

(2)

जबकि मूल्यपरक कथन केवल भावात्मक अभिव्यक्ति है जिन्हे सिद्ध नही कर सकते।

→ प्रत्यक्षवाद का सिद्धान्त ऑगस्ट काम्टे ने अपनी पुस्तक "पॉजीटिव फिलोसोफी" मे दिया।

→ प्रत्यक्षवाद के अनुसार केवल वैज्ञानिक पद्धति से प्राप्त ज्ञान ही प्रमाणिक माना जाता है। अतः इसके अनुसार प्रत्येक समाज-विज्ञान को प्रामाणिक रूप देने के लिए प्राकृतिक विज्ञान की पद्धति को अपनाना चाहिए।

काम्टे ने ज्ञान की प्रत्येक शाखा को विकास की उच्चतम अवस्था तक पहुचने के लिए तीन अवस्थाओं से गुजरने का वर्णन किया।

1. धर्म मीमांसी अवस्था।
2. तत्व मीमांसी अवस्था।
3. वैज्ञानिक प्रत्यक्षवादी अवस्था।

→ इस आधार पर कॉम्टे ने "विज्ञानो के श्रेणी क्रम" का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। जिसकी बुनियाद गणित को माना गया और सबसे अन्त में कॉम्टे ने समाज विज्ञान को रखा है।

→ नव प्रत्यक्षवाद अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद जिसका जनक "मैक्स वेबर" को माना जाता है। और बाद मे वियना सर्किल ने इसमें विशेष योगदान दिया जिन्होने भी वैज्ञानिकता पर विशेष जोर रहा।

रा.वि. मे व्यवहारवादी क्रान्ति ने भी मूल्यो की बजाय तथ्यो पर बल देकर प्रत्यक्षवाद का समर्थन किया।

इन सबके परिणामस्वरूप राजनीति विज्ञान का तो विकास हुआ लेकिन राजनीति दर्शन का विकास अवरुद्ध हो गया। परिणामस्वरूप राजनीति सिद्धान्त के पतन की चर्चा प्रारम्भ हुई।
इसके खिलाफ हर्बर्ट मॉरक्यूज ने प्रत्यक्षवाद की विशेष आलोचना की

इसी तरह डान्टे जर्मीनो ने अपनी पुस्तक "बियोण्ड आइडोलोजी" - "द रिवाइवल आफ पॉलिटिकल थ्योरी।" में यह कहकर राजनीति दर्शन का समर्थन किया कि "राजनीति सिद्धान्त वास्तव में राजनीति का आलोचना शास्त्र है और कुछ नहीं। (विवेक)

फिर उत्तर व्यवहारवादी आन्दोलन ने तथ्यो के साथ-2 मूल्यो पर भी जोर देकर राजनीति सिद्धान्त मे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

राजनीतिक सिद्धान्त का पतन और पुनःस्थापना

व्यवहारवाद क्रान्ति और प्रत्यक्षवाद के कारण रा० विज्ञान में वैज्ञानिकता पर विशेष जोर दिया गया। मूल्य आधारित ज्ञान को अप्रासंगिक बताया गया साथ ही इस ज्ञान को विचारधारा से प्रेरित माना गया। ---- मूल्य आधारित ज्ञान

→ कार्ल मार्क्स ने विचारधारा (दृष्टि) को मिथ्या चेतना कहकर इसकी आलोचना की। जबकि कार्ल पापर अपनी पुस्तक "ऑपन सोसाइटी एण्ड इटज एनीमीज" में कहा की विचारधारा केवल सर्वाधिकारवादी समाज मे पाई जाती है जहा पर स्वतन्त्र चिन्तन पर रोक होती है।

उपर्युक्त आधारो पर डेवीड ईस्टन ने 1953 में अपनी पुस्तक "द पॉलिटिकल सिस्टम" में राजनीतिक सिद्धान्त के पतन के निम्न कारण बताए।

1. परम्परागत राजनीति विज्ञान कोरे चिन्तन मनन पर आधारित है उसमे राजनीति यथार्थ का अभाव है।
2. परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त बिते युग के इतिहास की विवेचना रही

(4)

प्लेटो पूर्व का युनान 18वीं सदी का इटली 16वीं व 17वीं सदी का ब्रिटेन व 18वीं सदी के फ्रांस की स्थिति परिणाम स्वरूप अनेक राजनीतिक सिद्धान्तो का विकास हुआ जिनका वर्तमान मे कोई उपयोग नही है।

2. मील व मार्क्स के बाद अन्य कोई महान दार्शनिक पैदा नही हुआ अतः पुराने विचारों के साथ बने रहने का कोई फायदा नही है।

3. वर्तमान मे मूल्य आधारित आदर्श सिद्धान्तो की अपेक्षा व्यवहारिक राजनीति विज्ञान ज्यादा उपयोगी है।

~1953 मे ही कॉबन ने "पालिटिकल साइन्स क्वाटरली" के अपने लेख मैं तर्क दिया की समकालिन समाज में न तो पूंजीवादी व्यवस्था मे और न ही साम्यवादी व्यवस्था राजनीतिक सिद्धान्त की कोई प्रासंगिकता है

सीमोरलिप्सेट 1959 मे अपनी पुस्तक "पॉलिटिकल मैन" में तर्क दिया की समकालीन समाज में उपयुक्त व्यवस्था निर्धारित हो चुकी है; समाज की पुरानी मांग पुरी हो चुकी है; लोकतन्त्र ही उत्तम जीवन की वह मांग थी अतः राजनीतिक सिद्धान्त की अब कोई सार्थकता नही है।

वास्तव में राजनीति सिद्धान्त के पतन का दावा करने वाले विचारक राजनीति के अध्ययन को वैज्ञानिक रूप देने के लिए राजनीतिक दर्शन से नाता तोड़ने की मांग करते है। लेकिन राजनीतिक दर्शन मे विश्वास रखने वाले विचारक इस दावे को कभी स्वीकार नही करते और यही से राजनीति सिद्धान्त के पुनः उत्थान का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।

पुर्ननिर्माण

* लियो स्ट्रॉस ने राजनीति दर्शन के महत्व पर बल देते हुए कहा की व्यवहारवादी दृष्टिकोण के आधार पर मानवीय विषयों की जो उपेक्षा हुई है उसमे राजनीति संकट को बढ़ावा मीला है।